Raga of the Month September 2024 **Raga Shobhavari and its Murchana(s)**

राग ऑफ द मंथ - सप्टेंबर २०२४ **राग शोभावरी और उसकी मूर्च्छनाएँ**

राग शोभावरी बहुत प्राचीन राग नहीं। इस रागको औडव आसावरी, शुद्ध गुणकली और मीनामणि इन रागनामोंसे भी पहचाना जाता है। औडव आसावरी इस नामसे उसके स्केलका हमें पता चलता है। राग आसावरी के स्वरोंमे गंधार और निषाद वर्जित करके यह राग बनता है। अतः राग शोभावरी में शुद्ध रिषभ और मध्यम, पंचम और धैवत कोमल लगता है। पंचम और षड्ज वादी संवादी हैं। आसावरी थाट और कर्नाटक संगीतके नटभैरवी मेलकर्ता मे इस रागका वर्गीकरण किया जाता है। राग शोभावरी कर्नाटक संगीतके राग सूत्रधारी से मिलता जुलता है। इस राग का गान समय दिनका दूसरा प्रहर माना जाता है। इसके कारन यह राग रंजक होते हुए भी क्वचित ही मैफिलोंमे सादर किया जाता है।

अब हम शोभावरी राग की मूर्च्छनाओं का अभ्यास करेंगे। (संदर्भ - oceanofragas.com/ Raga Search/ Murchana Finder Table submenu की मददसे आप किसी भी रागकी सारी मूर्च्छनाएँ तथा वे किन रागोंसे मिलती-जुलती हैं यह देख सकते हैं।)

राग शोभावरी के मूर्च्छना-कुटुंब में शिवरंजनी, बैरागीभैरव तथा हिंडोल जैसे लोकप्रिय रागोंका समावेश है। नीचे दी हुई तालिकासे हम देख सकते हैं की दूसरी मूर्च्छनासे राग शिवरंजनी, तीसरी मूर्च्छनासे राग बैरागीभैरव , चौथी मूर्च्छनासे राग हिंडोल ऐसे कर्णमधुर राग मिलते हैं; और पहली मूर्च्छनासे कोई राग मिलता नहीं।

Scale	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	S सा	r रे	R रे	g ग	G ग	M म	m मं	P प	d ध	D ध	n नि	N नि	मूर्च्छना प्रक्रियासे बननेवाले राग
शोभावरी	सा		रे			म		प	ध				सा		रे			म		प	ध				
मूर्च्छना 1			सा			ग		म	मं				नि												x
मूर्च्छना 2						सा		रे	ग				प		ध										शिवरंजनी
मूर्च्छना 3								सा	रे				म		प			नि							बैरागीभैरव
मूर्च्छना 4									सा				ग		मं			ध		नि					हिंडोल

आज के ऑडियो में हम पंडित शरद सुतवणे*जीने गाई हुई राग शोभावरी में दो स्वरचित बंदिशे सुनेंगे।

***सूरमणी शरद सुतवणे ने संगीतकी शिक्षा नागपुरके श्री भय्याजी वझलवार तथा श्री शंकरराव सप्रेजीसे प्राप्त की। उन्हें उस्ताद अमीरखाँका भी विशेष रूपसे मार्गदर्शन कुछ समय मिला था । किराणा, पतिआला और इंदौर घरानेकी गायकीके आधारपर उन्होंने अपनी स्वतंत्र गायन शैली विकसित की थी। आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा भारतके अनेक प्रसिद्ध संगीत समारोहोंमे उन्होंने अपना गायन प्रस्तुत किया था। पुणे केंद्रमें म्यूज़िक कंपोजर इस पदपर अपना योगदान देकर बारह वर्ष आकाशवाणी की सेवा की है। उन्होंने अनेक नवरागोंका सृजन और बन्दिशोंकी रचना की है।**

उन्हें अनेक सन्मान प्राप्त हुए, जिनमे १९६९ सालमे युवा अवस्थामे बम्बईके " सूर सिंगार संसद "से प्राप्त " सूरमणी " पुरस्कार विशेष महत्त्व रखता है।

आभार : यू ट्यूब व्हिडिओ चॅनेल, श्री मनोज सुतवणे, पंडित यशवंतबुवा महाले.

सन्दर्भ - राग विज्ञान- भाग ७ - पं. विनायकराव पटवर्धन; राग निधी - भाग ४- प्रो. बी. सुब्बराव.

01-09-2024

Link to the list of 160+ "Raga of the month" articles

@ Archive of ROTM Articles - https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx